जैसे बहुत क़रीब

ग़ज़ल-संग्रह

के. पी. अनमोल

SHWETWARNA PRAKASHAN
New Delhi

Published by Shwetwarna Prakashan in Hindi in Paperback as *Jaise Bahut Karib* (First Edition) Authored by *K.P. Anmol* in the year 2023.

Shwetwarna Prakashan
212 A, Express View Apartment
Super MIG, Sector 93, Noida-201304, INDIA
Mobile: +91 8447540078
Email: shwetwarna@gmail.com
Website: www.shwetwarna.com

ISBN: 978-93-95432-**-*

Book Design by *Sharda Suman*

समर्पित

उस मिट्टी को

जिसने

अपनी गोद में पाला-पोसा

और

जीने का सलीक़ा सिखाया

समर्पित

अपने शहर

साँचोर को

काशी, मदीना, येरुशलम भी हैं ठीक पर
मेरे लिए है मेरा शहर सबसे बेहतरीन

अनुक्रमणिका

1. भूमिका 9
2. पत्थर रखा हुआ 17
3. आदमी के हाथ में जादू नहीं हैं 18
4. लालसा जी भर रही 19
5. वाह! क्या जादू बनाते हैं 20
6. थे जो जहाँपनाह के प्यारे 21
7. अब तक ये नहीं हारी मुई 22
8. ज़रा-सी आस अगर 23
9. यहाँ हर एक जनम से 24
10. वॉलपेपर पर लगा फ़ोटो 25
11. उदासी उतर गयी 26
12. कोई ऐसी डाल कर दे मुझे 27
13. हदों में ही रह गये 28
14. उजालों से पूछताछ 29
15. हो जाएँ सब सुकून पसंद 30
16. वही कैसेट जिन्हें सुनकर 31
17. जुगत लगाएँ कोई 32
18. ज्यूँ नदी का धारा गया 33
19. क्या हैं अब के लोग 34
20. दुनियादारी से कुछ फ़ुरसत 35

21. कुछ प्यारे दिन 36
22. इक वर्ग-पहेली दुनिया 37
23. रस्ते निकालिए 38
24. थोड़ी देर में 39
25. छोड़ा गया बलून 40
26. रस्ता लेटा है 41
27. बाड़ बैठेगी 42
28. धूप की जायी छायाएँ 43
29. शब्दों ने दिया है 44
30. जैसे बहुत क़रीब 45
31. न होगा वो ही दिखेगा 46
32. सारा जहान रास आया 47
33. कोई राह चल पड़े 48
34. सारी दुनिया जल पड़े 49
35. लोग अगर आसमान में 50
36. आ धमकी 51
37. एक-दूसरे के साथ 52
38. सखी! रास्ता नहीं 53
39. हश्र देखा है 54
40. ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा 55
41. हमें आरे सुकूं देंगे 56
42. बहुत मुश्किल समय में तो 57

43. ये शब्द मर नहीं सकते 58

44. हराम की जो कमाई पसंद करते हैं 59

45. चुनरिया रेत की 60

46. महक उठ रही है समूचे बदन से 61

47. जहाँ था ज़रूरी, वहीं ध्यान रक्खा 62

48. रफ़ा-दफ़ा 63

49. नदिया में पतवार हुए हैं जम्भेश्वर 64

50. कहो है कि नहीं 65

51. ग़ज़ब बोली बाँसुरी 66

52. संसार में मारे फिरेंगे 67

53. बहुत ही धीमी है 68

54. आदत न डालिए 69

55. ये जयकारे थोथे हैं 70

56. कि हिम्मत बँधी रहे 71

57. न बोर होते हैं 72

58. इक रोज़ मेरे जिस्म की नस-नस पे 73

59. करतब हमारे देख के 74

60. क़ीमती दृश्यों की धरपकड़ 75

61. जय भारत 76

62. वन्दे मातरम 77

63. सफ़र काट रहे हैं 78

64. फैसला दस-पचास में बदला 79

65. एक दिन ये हादसा हो जाएगा 80
66. वो नेकियाँ यूँ 81
67. नई पीढ़ी का जज़्बा 82
68. जग से दरवेश 83
69. एक बस मुस्कान ली 84
70. मरहबा कह दूँ 85
71. लाले पड़े हैं 86
72. गाँठ बाँध कर लौटा है 87
73. साँसें कुछ यूँ 88
74. नाम मेरा कहीं 89
75. क़ैद में किसकी समय है 90
76. ख़्वाबों की ताबीर 91
77. कुछ नज़ारे रह गये हैं 92
78. ख़ुशी के काफ़िले 93
79. कहाँ कर पाते हैं 94
80. ज़रा-सी कम समझदारी 95
81. बच्चों के हाथों में पत्थर 96

भूमिका

यह बहुत ही कड़वा सत्य है कि आज के समय की जीवन-शैली, आपाधापी, स्वार्थपरता, नफ़रत भरे इस दौर में जीवन मूल्यों का क्षरण इतना अधिक बढ़ चुका है कि उन्हें बचाने के लिए कुछ ऐसा लिखा-पढ़ा जाना ज़रूरी हो गया है, जो मन को सुकून दे, मन में ताज़गी से भर दे। मन को उद्वेलित करने की बजाय कुछ नरम-मुलायम-सा अहसास कराए। के. पी. अनमोल भी कुछ ऐसा ही लिख रहे हैं। वे इस संसार से तेज़ी से ख़त्म हो रहे जीवन मूल्यों को, आंतरिक पतन को, सामाजिक सौहार्द के क्षरण को अपनी ग़ज़लों के माध्यम से दोबारा बहाल करने की चेष्टा कर रहे हैं। क्योंकि वे जिस मिट्टी से आते हैं, वह राजस्थान के सांचौर इलाके की मिट्टी है। वह मिट्टी शौर्य और पराक्रम की मिट्टी होने के उपरांत भी प्रेम, ममता, परवाह, अपनत्व भरे अहसास की मिट्टी है। इस मिट्टी के लोग सीधे-सरल हैं लेकिन अपने स्वाभिमान पर तिल भर आँच आना पसंद नहीं करते। संवेदनाओं भरी फ़सल उपजाती इस मिट्टी के शायर के. पी. अनमोल निरंतर बेहतरीन लिख रहे हैं।

इनके तीन ग़ज़ल संग्रह पूर्व में आ चुके हैं, ‘एक उम्र मुकम्मल’ (2013), ‘कुछ निशान कागज़ पर’ (2019) एवं ‘जी भर बतियाने के बाद’ (2022)। इसके साथ ही वे कई चर्चित साझा ग़ज़ल संकलनों का हिस्सा भी रहे हैं। तमाम बड़े समीक्षकों के ग़ज़ल पर आलोचनात्मक आलेखों के संग्रहों में भी आपकी ग़ज़लों पर आलेख समाहीत हुए हैं। कई शोध आलेखों में इनके शेर उद्धृत हैं। अनमोल का नाम हिंदी ग़ज़ल की दुनिया में जाना-पहचाना नाम है या यह कहूँ तब भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि के. पी. अनमोल में हिंदी ग़ज़ल के भविष्य की भरपूर संभावनाएँ नज़र आतीं हैं। हिंदी ग़ज़ल को सजाने, संवारने में हिंदी ग़ज़ल की चुनरी पर अपनी उजली ग़ज़लों की झालर व शेरों के सलमा सितारे टाँगने का काम अनमोल जी बहुत ही सधी हुई कलमकारी से कर रहे हैं। वे अपने कहन में नवीनता के साथ-साथ मिट्टी की ख़ुशबू घोल देने में भी माहिर हैं। उनके लेखन में पेचीदगी नहीं है, वक्रता नहीं है, चालाकी नहीं है बल्कि वह

सादगी है, वह विमलता है कि इनकी ग़ज़लों को पढ़ने वाला पाठक भी कुछ समय के लिये किसी भी कारणवश उपजी हो, पर अपने मन के भीतर उपजी हुई समस्त कड़वाहट को यक़ीनन उस वक़्त बाहर निकाल कर मन को साफ़-निर्मल कर लेगा।

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से अनमोल का नया और चौथा ग़ज़ल संग्रह 'जैसे बहुत क़रीब' प्रकाशित होने जा रहा है। इस संग्रह के प्रकाशन की उनको बधाई देती हूँ। संग्रह को पढ़ते हुए अभिभूत हूँ। पाठकों को यह अवगत कराना चाहूँगी कि इस संग्रह की इन ग़ज़लों में भी उसी मिट्टी की ख़ुशबू है, उस मिट्टी के गहरे पर कोमल रंग साफ़ तौर पर महसूस किये जा सकते हैं, जिसमें गाँव की सरल ज़िन्दगी को श्रेष्ठ मानते हुए, बाक़ी भागदौड़ भरी, बे-मतलब की व्यस्तताओं को व्यर्थ बताते हुए, धत्ता बता दिया है। सच पूछिए तो जीवन में चाहिए भी सिर्फ़ दाल-रोटी होती है लेकिन भौतिकवादी विलासिताओं से भरी इस अंधी हौड़ के युग में सत्तर प्रतिशत मशक्कत बेवज़ह की जा रही है। ऐसा इस संग्रह के कई शेर भी कहते हैं। यथा-

बढ़ाकर दिन-ब-दिन अपनी उम्मीदें, चाहतें, सपने
हम अपनी ज़िंदगी को खुद ही एक कोल्हू बनाते हैं

उसी ग्रामीण अंचल का संतोष-प्रद जीवन को दर्शाता एक और शेर देखें-

हमें न दीजिये सोने के तार का लालच
हमें तो अब भी है कपड़ों में सूत-ऊन पसंद है

साथ ही-

सुख-चैन के बिसात की आदत न डालिए
हीरे-जवाहरात की आदत न डालिए

यही सादगी जीवन को सहज-सरल बनाकर रखती है। जब ऐसे शेर पाठक भी पढता है तो निश्चित रूप से कई तृष्णाओं से ख़ुद को मुक्त करने का प्रयास भी करता है। साथ ही इन ग़ज़लों में बचपन से जुड़ी हुई वे तमाम यादें, बचपन

के वे स्वर्णिम पल, कई शेरों में आये हैं, जो पाठकों को सहज ही अपने बचपन में लौटा ले जाने में सक्षम हैं-

वही कैसेट जिन्हें सुनकर बहुत झूमे हैं, गाये हैं
उन्हें यादों की गठरी में कहीं हम फैंक आये हैं
फ़ुदकना पेड़ पर, झूलों में लदना, धूप में तपना
बिना मोबाइल-इंटरनेट के क्या दिन बिताये हैं
पढ़ाई, खेल, मस्ती, यारियों के दिन ग़ज़ब के थे
वही दिन जिनके पल-पल में कई उत्सव मनाये हैं
मैं उसी अनमोल बरगद की ज़रा-सी छाँव हूँ
गाँव भर की ज़िंदगी को जो सुकूँ देता रहा

ज़िन्दगी से भरपूर सादगी और संतोष के मधुर रस से सने ऐसे बहुत सारे शेर इस संग्रह में पढ़ने को मिलेंगे।

इनको पढ़ते हुए पाठक अपने मन के तमाम झंझावतों को भूलकर कुछ देर के लिए ही सही पर निश्चित रूप से अपने जीवन में, अपने परिवेश में आसानी को, सुखद परिदृश्यों को, सादगी भरे जीवन को, अपनी मिट्टी की ख़ुशबू को, रिश्तों के अपनेपन को महसूस कर सकते हैं।

अनमोल ख़ुद अपने एक शेर में कहते हैं-

इक दफ़ा बस ठीक-से पढ़ ले उसे
हर कोई अनमोल का हो जाएगा

इनको पढ़ते हुए मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि यक़ीनन पाठक भी ऐसा ही महसूस करेंगे।

इस तप्त समय के, नफ़रत भरी सोच के कठोर, गर्म मन-आँगन पर जैसे ठंडे पानी की छींटे हैं के. पी. अनमोल की ग़ज़लें, इनके शेर-

लड़ाई, ख़ून, कलह, आगजनी इंसानो!
ज़मीं पर तुमको नहीं इसलिए उतारा गया

तथा

बाहर निकल के देखिए दुनिया भी है हसीन
अनमोल अपनी ज़ात की आदत न डालिए
ले जाओ दुखियारे दिन
रख जाओ कुछ प्यारे दिन

एवं

फिर से पुरानी रीत के रस्ते निकालिए
मिलने के बातचीत के रस्ते निकालिए
दुश्मन लड़ाई छोड़ के ख़ुद हार मान ले
अनमोल ऐसी जीत के रस्ते निकालिए
किसने सोचा था कि मज़हब एक दिन
खौफ़ के सामान-सा हो जाएगा

चारों ओर अंधेरों से घिरी हुई दुनिया और उन अंधेरों पर और अधिक मूर्खता की मोटी स्याह चादर ढंकते हुए चालाक लोग, फ़िरकापरस्त लोग, जहाँ आसपास हर साँस पर मिल जाते हों, ऐसी भीड़ से एक अलग सोच लिये यह शायर कुछ अलग ही कामना करता है। यथा-

अंधेरी रात की सूरत उजालने के लिए
तलब है जिसकी, वही एक मशाल कर दे मुझे
मैं खोज लाऊँ समंदर से सोन मछली को
किसी ग़रीब के हाथों का जाल कर दे मुझे

इस संग्रह की ग़ज़ल तैंतीस को पढ़कर मन करता है कि पूरी की पूरी ग़ज़ल यहाँ उद्धृत करूँ-

इससे पहले सारी दुनिया जल पड़े
नफ़रतों की आग पर कम्बल पड़े
चल दिए हैं वे हथियारों की ओर
काश! उनकी राह में दलदल पड़े
थक गये हैं खौफ़ से, दंगों से हम
अब किसी के हाथ कोई हल पड़े

यह पूरी की पूरी ग़ज़ल ही अपने आप में नायाब है, यह ग़ज़ल नहीं बल्कि ग़ज़ल के माध्यम से हिंसा, द्वेष, नफ़रतों को ख़त्म करने की याचना, लोगों के सद-राह पर आने की कामना, इंसानियत की अवधारणा, प्रेम व भाईचारे की बहाल होने की प्रार्थना है।

आज जब अधिकांशतः कवियों की कलम से अंगार उगलती हुई कविताएँ, गीत, ग़ज़ल लिख रही हों, ऐसे अबखे समय में, लेखन के इस संक्रमण काल के दौर में, प्रेम और त्याग से भरी अच्छी भावना लिखना, सादगी लिखना, प्रेम लिखना, बचपन लिखना, नादानी लिखना, प्रकृति लिखना, पर्यावरण लिखना और इन सबको मिट्टी के रंगों में घोल-घोल कर लिखना कुछ विरले ही लेखक कर पा रहे हैं, उनमें से अनमोल एक हैं।

संग्रह से कुछ और अपनी पसंद के शेर पाठकों तक ज़रूर पहुँचाना चाहूँगी-

इधर या उधर को नहीं कान रखा
जहाँ था ज़रूरी वहीं ध्यान रखा

अगर इसी तरह हर आदमी अपनी ही राह पर देखे तो जीवन के आधे झमेले और परेशानियाँ तो यूँ भी ख़त्म की जा सकती हैं।

एक दिन निकल पड़ूँ मैं अजानी-सी राह और
कर लूँ हर एक फ़िक्र को ख़ुद से रफ़ा-दफ़ा

एक संवेदनशील व्यक्ति दुख और परेशानियों में अधिक उलझता है, भले उसे अपना कोई निजी दुख-दर्द न हो लेकिन तमाम दुनिया का दुख-दर्द उसे अपना ही नज़र आता है और वह उसकी फ़िक्र और चिंता में बावला हुआ जाता है ठीक कबीर की तरह लेकिन वही संवेदनशील व्यक्ति कभी-कभी यह ज़रूर सोचता है कि कैसे इससे मुक्ति पाऊँ लेकिन संवेदनाओं के अलावा दुख को कहाँ ठौर है, यह जानते हुए भी शायर अपने मन को भी शेरों में ज़रूर रखता है।

अनमोल की ग़ज़लों में लोक बहुत ही शिद्दत से रचा-बसा है। कहीं लोक में प्रचलित खेल हैं तो कहीं लोक बोली की मिठास तो कहीं लोक की मूल जड़ें

कहलाने वाला आपसी मेल-मिलाप, सौहार्द है। इसी तरह इन्होंने अपनी एक मुसलसल ग़ज़ल पश्चिमी राजस्थान के लोक देवता जम्भेश्वर जी पर लिखी है, जो कि पश्चिमी राजस्थान के लोक में बहुत ही आस्था और विश्वास के साथ पूजे जाते हैं। जम्भेश्वर भगवान राजस्थान के विश्नोई समाज के द्वारा सबसे अधिक पूज्य लोक देवता हैं।

मानवता की ख़ातिर सूत्र दिए उनतीस
मानव पर उपकार हुए हैं जंभेश्वर

इस ग़ज़ल के बारे में यहाँ चर्चा करना इसलिए आवश्यक हो जाता है क्योंकि अधिकांशतः लोग जिस समय एक-दूसरे के धर्म को, एक दूसरे की आस्था को चोट पहुँचाने का, उसे खंडित करने की कुचेष्टा कर रहे हैं, उस संवेदनहीन समय में यह शायर भाईचारे की नींव को मज़बूत करने के लिए अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से अथक प्रयास कर रहा है।

इसी तरह के शेर अन्य कई ग़ज़लों में भी आये हैं। यक़ीनन जिस लेखक के लेखन में अगर ऐसा सामर्थ्य, ऐसी खूबियाँ हैं तो वह लेखन अपने आप में परिपूर्ण है और ऐसा लेखन महत्वपूर्ण भी है।

कुछ अलग मिज़ाज के शेर भी पाठकों द्वारा ज़रूर पसंद किए जाएँगे, जो ज़िंदगी की ख़ूबसूरती को बहुत ही नर्म-नफ़ीस तरीक़े से प्रस्तुत करते हैं-

ये बिस्तर, घर, बगीचा और मेरा दिल
तुम्हारे हिज्र में बिखरे पड़े हैं
हल्ला मचा है आज मोहल्ले में खेल का
कितना सुकूं है देख के बच्चों की धरपकड़
गीली ज़मीं पे बैठ के बादल निहारिए
अच्छी लगेगी आपको बूँदों की धरपकड़

मनुष्य कितना भी ऊपर उठ जाए, देवता तो नहीं होता न! कुछ कामनाएँ, कुछ इच्छाएँ उसके भीतर अंतस के आख़िरी कोने में दबी रह ही जाती हैं। ऐसा होना स्वाभाविक भी है तभी तो मानव, मानव है नहीं तो देवता हो जाएगा। मानव-मन के इसी सामान्य व्यवहार को दर्शाते हुए वे कहते हैं-

थी कहीं खुलकर कहीं भीतर तलक छुप कर रही
हर किसी के मन में लेकिन लालसा जी भर रही

यही लालसा है जो मनुष्य को हारने नहीं देती, यही लालसा है जो मनुष्य को निराशा के घोर अंधकार से पुनः खींच लेती है।

अच्छाई और सच्चाई कभी छुप नहीं सकती, उसे कोई बाँध नहीं सकता, यह जहाँ भी रहती हैं, सकारात्मक रहती हैं, सृजनशील रहती हैं यथा-

पेड़ ने पहरे बिठाये, डर दिखाया सब किया
पर हवा ख़ुशबू को अपनी गोद में ले कर रही

अच्छाई, अच्छाई को हर हाल में ग्रहण करके ही रहती है।

जीवन बेशक एक कँटीला बेगनबोलिया है लेकिन उसके ऊपर रंग-बिरंगे नर्म-मुलायम फूल भी तो हैं, अनमोल उन्हीं फूलों को चुनने का प्रयास करते हैं-

नई पीढ़ी का जज़्बा इस ज़मीं पर, नई फ़सलें उगाना चाहता है
सौंपकर पोथियाँ धर्म की, तुम दिलों से ख़ुदा ले गये
महज़ इक हार से थक कर न बैठो, अभी तो हाथ में मौक़े पड़े हैं

अनमोल जी की ग़ज़लें समकालीनता को और अधिक विस्तृत और व्यापक फ़लक पर ले जाने को प्रयासरत हैं। वास्तविकता यह है कि समकालीन ग़ज़लें केवल निराशा, हताशा, दुख, पीड़ा, शोक, चिंता की अभिव्यक्ति भर नहीं हैं इसके अतिरिक्त भी इन ग़ज़लों में कई रंगो का आना भी निहायत ज़रूरी है। जीवन की तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद तमाम उन्मादी घटनाओं के बावजूद तमाम आंतरिक हलचलों के बावज़ूद हिंदी ग़ज़ल जीवन के मूल्यों की ग़ज़ल है।

अनमोल अपनी ग़ज़लों में उन्ही जीवन मूल्यों को बचाने को प्रयासरत हैं।

उनकी ग़ज़लों में आशा व विश्वास भरी दृष्टि है, जो दुनिया की समस्त विडंबनाओं, विद्रूपताओं के उपरांत भी दुनिया में सुंदरता, सहजता, सरलता, आत्मीयता ढूँढती हैं व क़दम क़दम पर कामयाब होती हैं। के. पी. अनमोल जी

की ग़ज़लों में सच्चाई के बावजूद उनमें तल्खी नहीं है। इनके सच कहने का अंदाज़ थोड़ा जुदा है। वे सच्चाई तो कहते हैं लेकिन सच्चाई को थोड़ा-सा गुड़ में लपेटकर कहते हैं ताकि साँप भी मर जाए और लाठी भी नहीं टूटे। इन ग़ज़लों में प्रयोगधर्मिता भी कमाल की है। सोशल मीडिया एवं नए समय के नए शब्दों का प्रयोग भी इन ग़ज़लों में किया गया है। देशज और अंग्रेजी भाषा से भी गुरेज नहीं किया गया। कुल मिलाकर यह एक मुकम्मल ग़ज़ल संग्रह बना है, जिसमें हर वर्ग की पसंद की ग़ज़लें पढ़ने को मिलेंगी। ये ग़ज़लें समकालीनता की परिभाषा को विस्तार देती हैं, उस परिभाषा को और सटीक और सार्थक करने का प्रयास करती हैं।

हिंदी ग़ज़ल के फ़लक पर अनमोल की उपस्थिति ध्रुव तारे की अपनी एक अलग ही छटा बिखेर रही है। इस संग्रह की तमाम ग़ज़लें सबको ऐसे लगेंगी, जैसे बहुत क़रीब। मैं उनको इस संग्रह के प्रकाशन की बहुत-बहुत बधाई देती हूँ और शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'

(वरिष्ठ साहित्यकार)

31, वर्मा कॉलोनी, सबीना थाना वाली गली,

हिरण मगरी, सेक्टर-9, उदयपुर (राज.)-313002

पत्थर रखा हुआ

किस काम का है माल छिपाकर रखा हुआ
होगा पहाड़ थोड़े ही पत्थर रखा हुआ

आर. ओ. के दौर में है नहीं इसकी एहमियत
इक फ़ालतू घड़ा है उलटकर रखा हुआ

ये मॉल की चमक है यहाँ गुण न खोजिए
जूता किताब के है बराबर रखा हुआ

हरियालियाँ उजाड़ के हरियाली लाएगा!
धरती की गोद में है जो टॉवर रखा हुआ

घर में है एक पूरी ही दुनिया रखी हुई
दुनिया के एक कोने में है घर रखा हुआ

जगमग चमक रहा है मेरे मन की स्लेट पर
उसके हर एक नाम का अक्षर रखा हुआ

अनमोल ऐसे रक्खी है चरखी पतंग पर
ज्यूँ बोझ हो उड़ान का मन पर रखा हुआ

आदमी के हाथ में जादू नहीं हैं

वो बुरे कर्मों का अपने शाप देखे जा रहा है
रोज़ बेटों की लड़ाई बाप देखे जा रहा है

गाड़ियाँ रफ़्तार से आकर निकलती जा रही हैं
मोड़ पर इक पेड़ है, चुपचाप देखे जा रहा है

मन में हैरानी भरे कुछ भाव लेकर एक बच्चा
एकटक पानी से उठती भाप देखे जा रहा है

जानता है आदमी के हाथ में जादू नहीं हैं
ढोल अपने तन पे पड़ती थाप देखे जा रहा है

आदतें, अंदाज़, सारे ढंग उसके हू-ब-हू हैं
अपने बेटे में वो अपनी छाप देखे जा रहा है

वह अगर चाहे मिटा दे एक ही चुटकी में लेकिन
रब ज़माने भर के दुख, संताप देखे जा रहा है

पुण्य भी **अनमोल** के खाते में हैं थोड़े-बहुत-से
पर ज़माना सिर्फ़ उसके पाप देखे जा रहा है

लालसा जी भर रही

थी कहीं खुलकर, कहीं भीतर तलक छुपकर रही
हर किसी के मन में लेकिन लालसा जी भर रही

इस पुरुष से उस पुरुष के स्पर्श तक बरसों-बरस
कोई बतलाए अहिल्या किसलिए पत्थर रही

हर कोई ताने कसेगा, दोष तो देगा मगर
कौन समझेगा ये धरती किसलिए बंजर रही

ख़ुद से बोली-तू कहाँ नाज़ुक, कहाँ कमज़ोर है!
और वो साइकिल के पहिये में हवा भरकर रही

पेड़ ने पहरे बिठाये, डर दिखाया, सब किया
पर हवा ख़ुशबू को अपनी गोद में लेकर रही

रास्ता चिन्ता का जाता है चिता के द्वार तक
एक बस ये ही नहीं रहनी थी मन में, पर रही

फिर उसे **अनमोल** होने से कोई क्या रोकता
पाँव धरती पर थे जिसके, आँख अंबर पर रही

वाह! क्या जादू बनाते हैं

हमीं ये सोचते हैं 'वाह! क्या जादू बनाते हैं'
हक़ीक़त में हमें कुछ लोग बस उल्लू बनाते हैं

ज़रा-सी देर में ही हम झुलसकर ढूँढते हैं छाँव
न जाने फूल कैसे धूप में ख़ुशबू बनाते हैं

बढ़ाकर दिन-ब-दिन अपनी उम्मीदें, चाहतें, सपने
हम अपनी ज़िंदगी को ख़ुद ही इक कोल्हू बनाते हैं

कभी ख़ुशियाँ चमक बनकर उभर आती हैं आँखों में
बहुत-से ग़म जमा होकर कभी आँसू बनाते हैं

हज़ारों बार की नाकामियों के बाद जाके लोग
कभी पहिया बनाते हैं, कभी याहू बनाते हैं

हमीं हालात गढ़ते हैं हमेशा अपने हाथों से
हवा को हम ही पुरवाई, हमीं तो लू बनाते हैं

ख़ुद उनके हाथ ही उनके कहे में है नहीं **अनमोल**
कमीज़ों के लिए जो रात-दिन बाज़ू बनाते हैं

थे जो जहाँपनाह के प्यारे

थे जो जहाँपनाह के प्यारे, नहीं खुले
और इस वजह से भेद भी सारे नहीं खुले

घर में किसी भी शख़्स को ये फ़िक्र ही नहीं
मेहमान क्या कहेंगे जो द्वारे नहीं खुले

देना तो चाहता हूँ मगर दूँ मैं क्या जवाब
मुझ पर अभी तुम्हारे इशारे नहीं खुले

कैसे कहूँ गगन में बहुत दूर जाएँगे
धागे से जब अभी ये गुबारे नहीं खुले

मैंने भरम बचा के रखा है किसी तरह
वे सोचते हैं पत्ते हमारे नहीं खुले

देखे थे कैमरे की नज़र ने जो बेह्तरीन
तस्वीर में वो सारे नज़ारे नहीं खुले

तालों-सी फ़ितरतें न थीं **अनमोल** इसलिए
हम लोग चाबियों के सहारे नहीं खुले

अब तक ये नहीं हारी मुई

इतने यत्नों बाद अब तक ये नहीं हारी मुई
बढ़ रही है घास की मानिंद बेकारी मुई

लड़ते-लड़ते बिक गये घर-बार, ज़ेवर और दुकान
सैंकड़ों जल्लाद से बढ़कर है बीमारी मुई

सच को सच और झूठ को हम झूठ कह पाते नहीं
ले ही बैठेगी हमें इक दिन तरफ़दारी मुई

डर के मारे जब सहमकर रो रहा होता है पेड़
टूट क्यों जाती नहीं है उस घड़ी आरी मुई

साथ मौसम का मिला तो भोली-भाली-सी हवा
हो गयी है कितने ही लोगों की हत्यारी मुई

ये मशालें चाहती हैं भोर तक लड़ना मगर
और भी गहरा रही है रात अँधियारी मुई

सादगी, संजीदगी, साहस सभी **अनमोल** हैं
पर इन्हें भी मात दे देती है होशियारी मुई

ज़रा-सी आस अगर

ज़रा-सी आस अगर छिप के मन में रहती है
तो चाह उड़ान की पूरे बदन में रहती है

इमारतें हैं बहुत आलीशान माना मगर
सड़क से पूछ वो कितनी घुटन में रहती है

किसी भी डाल पे बैठी भले ही दिख जाए
असल में मन से तो चिड़िया गगन में रहती है

मैं ग़ौर करते हुए सोचता हूँ फ़ोटो पर
कि माँ की छाया कहीं अब बहन में रहती है

इसे दिखा था कभी ख़्वाब ठहरे पानी का
तभी से आँख अजब-सी जलन में रहती है

जो वायरल हैं उन्हें देख हो न तू हैरान
जो चीज़ अलग हो वही तो चलन में रहती है

बताऊँ कैसे मैं फीलिंग वो तुम्हें **अनमोल**
तुम्हारे वास्ते जो मेरे मन में रहती है

यहाँ हर एक जनम से

यहाँ हर एक जनम से दुखों का आदी है
ये बात किसने शहंशाह को बता दी है

हमारी पीठ पे है जो बहुत ही भारी चीज़
हमें ख़बर ही नहीं है ये किसने लादी है

ग़रीब-अमीर यहाँ सबको न्याय है मिलता
न जाने किसने ये अफ़वाह-सी उड़ा दी है

ये बात जानती हैं सिर्फ आग की लपटें
वे कौन हैं कि जिन्होंने इसे हवा दी है

मुझे ये लगता है मासूमियत तो चुपके-से
हमारे दौर ने जैसे कहीं छिपा दी है

जिसे जवानी में घर का सहारा होना था
वो सारे गाँव में सबसे बड़ा फ़सादी है

अब इस घड़ी का तो **अनमोल** इंतज़ार न था
हमारी आँख को तस्वीर तूने क्या दी है

वॉलपेपर पर लगा फ़ोटो

इस परेशां दिल की धड़कन को सुकूं देता रहा
वॉलपेपर पर लगा फ़ोटो सुकूं देता रहा

इस जहाँ की मुश्किलों से ऊबकर, थक-हारकर
मन बहुत बेचैन था पर 'वो' सुकूं देता रहा

हर कोई सुनते हुए ख़ुश हो रहा था बेहिसाब
एक क़िस्सा जाने कितनों को सुकूं देता रहा

मैं नहीं कह पाऊँगा इस दौर की ख़ातिर कभी
कह रहे हैं सब भले, 'कह दो-सुकूं देता रहा'

फ़्रूटवाला जान जाए काश उसकी एहमियत
पेड़, तपती धूप में भी जो सुकूं देता रहा

मेरे भीतर एक बच्चा था बहुत शैतान-सा
जब तलक ज़िन्दा रहा बच्चो, सुकूं देता रहा

मैं उसी **अनमोल** बरगद की ज़रा-सी छाँव हूँ
गाँव भर की ज़िंदगी को जो सुकूं देता रहा

उदासी उतर गयी

रोका हज़ार बार था फिर भी उतर गयी
मेरे बदन की तह में उदासी उतर गयी

कैसी ज़ुबान है ये हर इक डर को छोड़कर
अपने तमाम वादों पे पूरी उतर गयी

शैतानियाँ तो देखे कोई धूप की ज़रा
जिस ओर मन किया वहीं चढ़ ली, उतर गयी

मैं उसकी साँस-साँस के भीतर समा गया
मेरे वजूद में वो समूची उतर गयी

फिर एक रोज़ सारा ही सामान बँध गया
घर से हमारे नाम की तख़्ती उतर गयी

सदियों से जो उजाड़ था खंडर वो ढह गया
दुनिया के सर से एक बुराई उतर गयी

अनमोल अपने आप के मालिक रहें हैं तो
कैसे रगों में फिर ये ग़ुलामी उतर गयी

कोई ऐसी डाल कर दे मुझे

हों जिसपे फूल, कोई ऐसी डाल कर दे मुझे
निगाह फ़ेर कभी और कमाल कर दे मुझे

मैं एक धार हूँ दरिया की जिसपे पहरा है
तुझी से आस लगी है, बहाल कर दे मुझे

नज़र तलाश रही है जो इक हसीं मंज़र
उसे तू सामने रख दे, निहाल कर दे मुझे

महक उठेगी मेरे तन की ख़ाक या मौला!
वतन के हक़ में कभी इस्तेमाल कर दे मुझे

अँधेरी रात की सूरत उजालने के लिए
तलब है जिसकी, वही इक मशाल कर दे मुझे

मैं खोज लाऊँ समन्दर से सोनमछली को
किसी ग़रीब के हाथों का जाल कर दे मुझे

मैं इस जहान में **अनमोल** होके रह जाऊँ
हुनर के मोतियों का एक थाल कर दे मुझे

हदों में ही रह गये

बेसाख़्ता अगन की हदों में ही रह गये
हम आपसी जलन की हदों में ही रह गये

मिट्टी को छोड़ अंत में पाते भी और क्या
वे लोग जो बदन की हदों में ही रह गये

कुछ लोग छा गये हैं समूचे जहान पर
कुछ लोग अपने मन की हदों में ही रह गये

इंसान के क़दम हैं सितारों की धूल पर
पंछी मगर गगन की हदों में ही रह गये

ख़ुशबू हवा के साथ शहर भर में घुल गयी
और फूल बस चमन की हदों में ही रह गये

अफ़सोस! अम्न चाहने वाले कई ख़याल
बारूद और गन की हदों में ही रह गये

आँखों ने जितना देखा उसे सच समझ लिया
अनमोल हम 'विजन' की हदों में ही रह गये

उजालों से पूछताछ

बाक़ी पड़ी है कितने ही सालों से पूछताछ
कोई न कर सका है उजालों से पूछताछ

चलते बने बटोर के सारे हसीन फूल
करने गये थे लोग जो डालों से पूछताछ

ये तो नुकीले शूलों की फ़ेहरिस्त है, मुझे
उम्मीद थी करोगे सवालों से पूछताछ

किस-किस के वार रोके नहीं जान-बूझकर
मन है करूँ मैं अपनी ही ढालों से पूछताछ

होने लगेंगे अम्न-पसन्दों के राज़ फाश
करने चलेंगे हम जो बवालों से पूछताछ

मिट्टी के राज़ क्या ही बताएगी जे. सी. बी.
करनी थी दोस्त तुमको कुदालों से पूछताछ

अनमोल! डरने वाली कोई बात ही नहीं
होती है सिर्फ़ 'कर्म के कालों' से पूछताछ

हो जाएँ सब सुकून पसंद

ख़ुदा जहां में हैं जितने भी लोग ख़ून पसंद
कुछ ऐसा कर कि वे हो जाएँ सब सुकून पसंद

ये साथ एक तरह से है 'अफ़लातून पसंद'
वो है 'धमाका पसंद' और मैं 'बलून पसंद'

जो फ़ितरतन ही रहा हो हमेशा जून पसंद
बताओ कैसे करेगा वो देहरादून पसंद

हमें न दीजिए सोने के तार का लालच
हमें तो अब भी है कपड़ों में सूत-ऊन पसंद

वो जिसको तुमने कभी फ़ेवरिट बताया था
हमारे फ़ोन को है वो ही एक ट्यून पसंद

हर इक से ख़्वाब हक़ीक़त में कब बदलता है
हर एक यानी कहाँ होता है जुनून पसंद

वही हैं हम जिन्हें कीचड़ नहीं सुहाता और
वही हैं हम, जो हैं **अनमोल** 'मानसून पसंद'

वही कैसेट जिन्हें सुनकर

वही कैसेट जिन्हें सुनकर बहुत झूमे हैं गाये हैं
उन्हें यादों की गठरी में कहीं हम फेंक आये हैं

वो साइकिल जो कि कैंची में भी सरपट दौड़ा करती थी
उसी साइकिल के पहिये इस समय में लड़खड़ाये हैं

किताबें लेने-देने के बहाने याद हैं ना वो!
कि जिनकी आड़ में कितने पहर हमने बिताये हैं

फुदकना पेड़ पर, झूलों में लदना, धूप में तपना
बिना मोबाइल-इंटरनेट के क्या दिन बिताये हैं

ज़रा-से काम के चक्कर में घण्टों तक चले चलना
हम अपने दोस्तों के साथ रस्ते नाप आये हैं

पढ़ाई, खेल, मस्ती, यारियों के दिन ग़ज़ब के थे
वही दिन जिनके पल-पल में कई उत्सव मनाये हैं

वही **अनमोल** दिन थे तब नहीं पर अब ये लगता है
मज़े हम ज़िंदगी के बचपने में लूट आये हैं

जुगत लगाएँ कोई

फ़लक ज़मीं पे गिराएँ जुगत लगाएँ कोई
नदी को मोड़ के लाएँ जुगत लगाएँ कोई

पहाड़ दुख के किसी रोज़ तोड़ डालें हम
भुजाएँ काम में लाएँ जुगत लगाएँ कोई

हर एक शख़्स को चाहत हो अपनी यारी की
जुगाड़ ऐसा लगाएँ जुगत लगाएँ कोई

फटकने देते नहीं पास जो अभी अपने
वे आके हाथ बढ़ाएँ जुगत लगाएँ कोई

घड़ी में सारे खिवैया मुरीद हो बैठें
यूँ नाव पार लगाएँ जुगत लगाएँ कोई

जो 'ड्रीम सीट' है शोहरत के आसमां पे वहाँ
हम अपने आपको पाएँ जुगत लगाएँ कोई

भले ही कौड़ियों के दाम न हों पर **अनमोल**
अदब में दुनिया झुकाएँ जुगत लगाएँ कोई

ज्यूँ नदी का धारा गया

ख़राब रास्तों से जब कभी गुज़ारा गया
मैं यूँ गुज़रता गया ज्यूँ नदी का धारा गया

किसी का काम बना है तो क्या परेशानी
मुझे बताओ भला इसमें क्या तुम्हारा गया

अब इस शहर की मुसीबत से जान छूटी है
वो एक झूठ जो सच्चा था, आज मारा गया

बदन से जान तलक झौंक दिया सब उसने
तब एक ख़्वाब को ताबीर तक उतारा गया

मदद तो डूबने वाले की कर मगर ऐसे
कि उसको ध्यान रहे किस तरह उबारा गया

लड़ाई, ख़ून, कलह, आगज़नी इंसानो!
ज़मीं पे तुमको नहीं इसलिए उतारा गया

मैं बार-बार उसे पूछता हूँ ये **अनमोल**
बता वो क्या थी वजह जिसपे दिल को हारा गया

क्या हैं अब के लोग

क्या हैं अब के लोग, हूँ हैरान बतलाते हुए
काम ये आते नहीं हैं, काम में आते हुए

क़ामयाबी? हह्! करूँगा क्या मैं इसका अब भला
खो चुका हूँ जाने क्या-क्या मैं इसे पाते हुए

हाँ, यही ऊँचाइयाँ ही तो हमारी शान हैं
बादलों ने कह दिया आकाश पर छाते हुए

जोश में भरकर गये तो थे यहाँ से लोग पर
क्यों न जाने थक गये ख़ुशहालियाँ लाते हुए

जब तलक बस में हो अपने, तब तलक महका करो
फूल ने सन्देश छोड़ा है ये मुरझाते हुए

किस तरह आँखें बचा पाएँगी अपना हौसला
बत्तियाँ थकने लगी हैं धुंध सरकाते हुए

ये बदन **अनमोल** होने को है कुछ ही देर में
हो रहा हूँ ख़ुश मैं तेरा नाम गुदवाते हुए

दुनियादारी से कुछ फ़ुरसत

दिन-दिन भर की मारामारी से कुछ फ़ुरसत
कब मिलती है दुनियादारी से कुछ फ़ुरसत

उसकी यारी के बारे में सोचेंगे कुछ
जब मिल जाए जग की यारी से कुछ फ़ुरसत

छाती पे ग़म कुण्डली मारे लहराता है
मन चाहे इस अत्याचारी से कुछ फ़ुरसत

जीवन ऐसे ही कटता है, कट जाएगा
सुख-दुख लेंगे बारी-बारी से कुछ फ़ुरसत

फ़ुरसत से उकताये लोगों की सुन मौला!
माँग रहे हैं वे बेकारी से कुछ फ़ुरसत

सोचो-सोचो ऐसा क्या है जिसके कारण
रिश्ते ढूँढे रिश्तेदारी से कुछ फ़ुरसत

तब तो वह फ़ुरसत भी हो उट्ठेगी **अनमोल**
हम ले पाये गर तैयारी से कुछ फ़ुरसत

कुछ प्यारे दिन

ले जाओ दुखियारे दिन
रख जाओ कुछ प्यारे दिन

सूरज के रहते हैं क्यों
दुख के मारे, हारे दिन

कब होते हैं बतलाओ
एक सरीखे सारे दिन

उसने ये सोचा कब था
दिखलाएँगे तारे दिन

शाम ढले वह आएगा
जल्दी-जल्दी जा रे दिन

याद की गुल्लक में महफ़ूज़
हैं बचपन के सारे दिन

सिर्फ़ उजालों के **अनमोल**
करता है जयकारे दिन

इक वर्ग–पहेली दुनिया

क्यों न हो पायी किसी की भी सहेली दुनिया
जान जाओगे कभी तुमसे जो खेली दुनिया

लाख ढूँढ़े से भी मिल पाना बहुत मुश्किल है
एक भी शख़्स कि जिसने न हो झेली दुनिया

सारे अह्सास इमोज़ी में बयां होते हैं
ये नया दौर है, इसकी है नवेली दुनिया

मैं क़लम हाथ लिए ध्यान-मगन बैठा हूँ
सामने रक्खी है इक 'वर्ग-पहेली दुनिया'

जिसमें मेहँदी से मेरा नाम लिखा है उसने
मुझको लगती है वही एक हथेली दुनिया

ये मुझे रोकना चाहे भी तो क्या रोकेगी
मैं हज़ारों-सा हूँ और एक अकेली दुनिया

मौज से रहता है सबके ही दिलों में **अनमोल**
वो महाराज, है जिसकी ये हवेली दुनिया

रस्ते निकालिए

फिर से पुरानी रीत के रस्ते निकालिए
मिलने के, बातचीत के रस्ते निकालिए

बीते समय की याद के साये में बैठकर
गुज़रे दिनों की प्रीत के रस्ते निकालिए

उनको टटोलिए कि हैं जो लम्हें दिल के पास
यानी कभी अतीत के रस्ते निकालिए

महसूस ख़ुद में कीजिए पहले ख़ुदा को फिर
मन्दिर के और मसीत के रस्ते निकालिए

रस्ते निकालने ही हैं तो ठान लें कभी
फिर आर-पार भीत के रस्ते निकालिए

हमको ये द्वेष-वेष नहीं दे सके सुकून
इस बार प्रीत-वीत के रस्ते निकालिए

दुश्मन लड़ाई छोड़ के ख़ुद हार मान ले
अनमोल ऐसी जीत के रस्ते निकालिए

थोड़ी देर में

चाहे तो लौट आए कोई थोड़ी देर में
तब भी लगेगी देर इसी थोड़ी देर में

जो बर्फ ओढ़ बैठ गये धूप में वे लोग
सूरज को दोष देंगे अभी थोड़ी देर में

मुझको कुआँ समझने ही वाला था सारा गाँव
पर मुझमें प्यास जाग उठी थोड़ी देर में

सबको जो लग रही थी मज़ेदार, हाँ वही
रफ़्तार जान लेके रही थोड़ी देर में

वह बात जो उठी है तेरे ज़ेह्न में अभी
कहने मैं जा रहा था वही थोड़ी देर में

जो बात राज़ की हैं उसे रख संभालकर
वरना हवा में होगी खड़ी थोड़ी देर में

अनमोल प्राण मिलते ही पत्थर की इक शिला
फूलों के गीत गाने लगी थोड़ी देर में

छोड़ा गया बलून

छोड़ा गया बलून उधर आसमान में
बच्चा ख़ुशी से झूम उठा अपनी तान में

हर कोई इसको सोच के हो जाए बावला
जाने कशिश है कैसी मुई इस उड़ान में

पोते में देख अपने ही बेटे का बचपना
आँखें बहे ही जाती हैं मन के उफ़ान में

दादी बलाएँ लेके नज़र भर के ख़ुश हुई
बोली-"मुझे ये प्यारा है सारे जहान में"

होता है ब्याज सूद से प्यारा है बात सच!
दादा खड़े हैं तनके अलग अपनी शान में

आँसू ख़ुशी के धोते हैं मन को कुछ इस तरह
धुलते हैं सारे मैल ज्यूँ गंगा-नहान में

कैसे न कोई माने कि **अनमोल** था ये जन्म
इतना सुकूं मिले जो सफ़र की ढलान में

रस्ता लेटा है

जिसके ऊपर एक ज़माना चलता है
सदियों से चुपचाप वो रस्ता लेटा है

होता है वो जैसा लिक्खा होता है
ऐसा होता है ये ही तो लिक्खा है

देख रहा हूँ ख़्वाबों की खिड़की के पार
चाँद की धरती पर इक बूढ़ा बैठा है

ईश्वर सबके भीतर रहता है लेकिन
किसने किसके भीतर जाकर देखा है

उसने पाया है रस्ता दीवारों में
जिसने ख़ुद के पार निकालकर देखा है

जिस-जिस ने जोड़ा था, ख़ाली लौटे हैं
तू भी बतला तूने क्या-क्या जोड़ा है

मन का झुकना यह बतलाता है **अनमोल**
किसके मन में किसकी कितनी श्रद्धा है

बाड़ बैठेगी

मन के खेतों में बाड़ बैठेगी
तो बहुत कुछ बिगाड़ बैठेगी

चाह पहले दिखाएगी सपने
और फिर पल्ला झाड़ बैठेगी

दर्द, आहें, उदासियाँ, क़िस्से
याद क्या-क्या उखाड़ बैठेगी

जो थकावट है दिन के चेहरे पर
साँझ का मन बिगाड़ बैठेगी

दुख में इक और दुख है बेटे का
माँ ने देखा तो ताड़ बैठेगी

वह जो खाकर पछाड़ बैठी है
लग रहा था पछाड़ बैठेगी

क्या भरोसा है धूप का **अनमोल**
जाने कब किसकी आड़ बैठेगी

धूप की जायी छायाएँ

नादानों के हाथों में जब आती हैं
अच्छी चीज़ें भी ख़तरा हो जाती हैं

जो सर्दी में जान बचाती हैं, वे ही
आग की लपटें जंगल भी सुलगाती हैं

ये भी सच है धूप की जायी छायाएँ
अक्सर धूप से बचने के काम आती हैं

जाने क्या-क्या पढ़ती है अख़बारों में
वे आँखें जो अक्षर बाँच न पाती हैं

मन का चाहा कर लेने दो बच्चों को
आँखें ठोकर खाकर ही खुल पाती हैं

मुल्लाजी से माफ़ी, मस्जिद का सम्मान
पर मेरी सब दौड़ें तुम तक जाती हैं

कुछ चीज़ें **अनमोल** तो होती हैं लेकिन
जान सकें हम तब तक वे खो जाती हैं

शब्दों ने दिया है

हर दफ़ा, हर बार शब्दों ने दिया है
भावों को आकार शब्दों ने दिया है

चाहतों के पार शब्दों ने दिया है
आसमां का द्वार शब्दों ने दिया है

मुझसे नालायक़ को जीने का सलीक़ा
प्रेम के दो-चार शब्दों ने दिया है

बाँचते ही खिल उठी है उसकी सूरत
वाह! क्या उपहार शब्दों ने दिया है

मान या मत मान लेकिन है यही सच
सोच को आधार शब्दों ने दिया है

मानती है बात ये सारी ही दुनिया
जो दिया दमदार शब्दों ने दिया है

शब्द हैं मेरे लिए **अनमोल** मोती
मुझको अपरम्पार शब्दों ने दिया है

जैसे बहुत क़रीब

कुछ लोग हमने रक्खे हैं मन के बहुत क़रीब
पानी नदी के रहता है जैसे बहुत क़रीब

हर कोई उसके वास्ते रखता है एक चाह
आकर बग़ल में बैठे व बैठे बहुत क़रीब

उस आदमी में ऐसा भला क्या है, किसलिए
झूठे तो दूर रहते हैं, सच्चे बहुत क़रीब

जादू है इश्क़ इसमें वो अपना-सा एक ख़ास
देखे से दूर रहता है, सोचे बहुत क़रीब

ये क़ायनात है कोई बिखरी हुई पज़ल
जोड़े तो मुझको जोड़े वो उसके बहुत क़रीब

उसकी रगों में आग का दरिया है इन दिनों
जाने को कह रहा है वो जल के बहुत क़रीब

मैं चाहता रहा हूँ कि **अनमोल** हर ख़ुशी
सबके क़रीब हो मगर उसके बहुत क़रीब

न होगा वो ही दिखेगा

न होगा वो ही दिखेगा व तूल पकड़ेगा
हमारा दौर भी क्या-क्या फ़िज़ूल पकड़ेगा

जो ख़ुद को देख सकेगा महीन नज़रों से
वही तो सारे ज़माने की भूल पकड़ेगा

कोई ज़रूरी नहीं है कि वो निभाए सदा
तुम्हारा हाथ जो कहकर क़ुबूल, पकड़ेगा

तमाम उम्र जिसे ख़्वाहिशें थीं हीरे की
किसे ख़बर थी वही हाथ धूल पकड़ेगा

ये आदमी जो है तैयार लड़ने-मरने को
न जाने कब ये फ़सादों का मूल पकड़ेगा

किसी ने सोचा नहीं होगा मेरे बारे में
किसी के प्यार में ये शख़्स फूल पकड़ेगा

न जिसके पास सिफ़ारिश की कॉल हो **अनमोल**
पुलिस भी उसको डराएगी, रूल पकड़ेगा

सारा जहान रास आया

दिल को सारा जहान रास आया
जब से वह शख़्स मेरे पास आया

रूह दरिया के ख़्वाब बोने लगी
कौन साँसों में बनके प्यास आया

ऐसे आया वो बाँहों में जैसे
होंठ तक हाथ से गिलास आया

यह मकां घर में हो गया तब्दील
उसका आना भी कितना ख़ास आया

दर्द की एक लम्बी रात के बाद
दिन तो आया मगर उदास आया

जिसको आना था हँसते-गाते हुए
हाय! वह पल ही बदहवास आया

मन को आवारगी मिली **अनमोल**
तन के हिस्से में बस लिबास आया

कोई राह चल पड़े

सूरज के बाद ज्यूँ ही अँधेरे निकल पड़े
अनगिन सितारे रात की आँखों में जल पड़े

माँगो अगर किसी को तो शिद्दत से माँगना
ऐसे कि उसकी ओर कोई राह चल पड़े

आवाज़, शोर, चीख़, सदाएँ हों या पुकार
जब ध्यान लग चुका हो तो फिर क्या ख़लल पड़े

यह आग, जो लगी है ख़ुदा तेरे नाम पर
इस आग में तमाम ख़ुदाई न जल पड़े

बस रोटियों की फ़िक्र में खोए हुए ग़रीब
कैसे बताएँ राह में कितने महल पड़े

अरसे से इक ख़बर का मुझे इंतज़ार है
ऐसी ख़बर जो सुनके मेरा मन उछल पड़े

अनमोल उस जगह से बचाए तुम्हें ख़ुदा
पग तो जमे हों पर जहाँ नीयत फ़िसल पड़े

सारी दुनिया जल पड़े

इससे पहले सारी दुनिया जल पड़े
नफ़रतों की आग पर कम्बल पड़े

द्वेष रखती हो जो दूजों के लिए
ऐसी हर इक सोच पर साँकल पड़े

चल दिए हैं वे जो हथियारों की ओर
काश उनकी राह में दलदल पड़े

धर्म क्या है, यह नहीं समझा कोई
धर्म की रक्षार्थ सारे चल पड़े

थक गये हैं ख़ौफ़ से, दंगों से हम
अब किसी के हाथ कोई हल पड़े!

आदमी इंसान हो जाता है, जब
दूसरों के दर्द पे मन गल पड़े

आप हुल्लड़ में न थे **अनमोल** जी
आपके माथे पे काहे बल पड़े

लोग अगर आसमान में

जिसका हमेशा ध्यान रहा है थकान में
अव्वल न आ सका वो किसी भी उड़ान में

छाती फ़लक की भेद सके अपने तीर से
ताक़त नहीं है इतनी किसी भी कमान में

बिलकुल न देख पाये जो औलाद की ख़ुशी
ऐसा भी क्या रखा है मरी झूठी शान में

सँभला नहीं तो गिर के कहीं चोट खाएगा
मैंने बदन को छोड़ दिया है ढलान में

कैसे बचा रहेगा दिलों में ज़मीं का मोह
रहने लगेंगे लोग अगर आसमान में

अपनी हदें ही उसको रखेंगी सहेजकर
पानी ये बात भूल गया था उफ़ान में

अनमोल कोई काम जो इतिहास हो सके
ऐसा भी कुछ न ख़ास हुआ वर्तमान में

आ धमकी

न जाने कौनसे पल की कमाई आ धमकी
सफ़र के बीच अचानक ही खाई आ धमकी

ख़ुशी के बाद तुरन्त आई एक ग़म की ख़बर
शराब पीते ही जैसे खटाई आ धमकी

अभी-अभी तो किताबों से सिर हटाया था
अभी ही सामने जग की पढ़ाई आ धमकी

'ज़रा-सी बात पे यूँ कौन डाँटता है' ये सोच
वो ख़ुद को रोक न पायी, रुलाई आ धमकी

क़दम बढ़ाते ही आयी है तेज़ धूप उतर
इरादे! देख मुसीबत की माई आ धमकी

ये किसके ज़ुल्म को शह देने के इरादे से रात
अँधेरी गठरी बग़ल में दबाई, आ धमकी

तुम्हारे आते ही **अनमोल** हो गया निर्मल
तुम्हारे आते ही इसमें भलाई आ धमकी

एक-दूसरे के साथ

एक-दूसरे के साथ रहे हैं, वही हैं हम
एक-दूसरे के साथ रहे थे, तभी हैं हम

एक-दूसरे के दर्द में रोये हैं टूटकर
एक-दूसरे की आँख से बहती ख़ुशी हैं हम

घुलमिल गये हैं कितनी जगह पर, कहाँ-कहाँ
कितने ही पानियों से बनी इक नदी हैं हम

सदियों से एक-दूसरे की जान हैं रहे
इंसानियत को जोड़ने वाली कड़ी हैं हम

कुछ साथ, साथ रहके ही होते हैं ख़ूबतर
'तू' और 'मैं' हैं साथ तभी तो अभी हैं 'हम'

नफ़रत का काम तोड़ना है, बाँटना है बस
जब तक हैं इससे दूर तभी तक सही हैं हम

ये देखिए दिलों में कहाँ तक उतर सके
अनमोल ये न देखिए कितने बली हैं हम

सखी! रास्ता नहीं

ये भी है कोई बात सखी! रास्ता नहीं
उसकी तरफ कहीं भी कोई रास्ता नहीं

उनको कभी तो कोई ये बतलाएगा ज़रूर
तैयार तो खड़े हैं कई, रास्ता नहीं

उस ओर हैं नज़ारे बहुत ही हसीन पर
ये बात जान लो कि नदी रास्ता नहीं

क्यूँ बेतहाशा भीड़ है, हर ओर जाम है
क्या और इस शहर में कोई रास्ता नहीं

इस रास्ते से घर की तरफ लौटता मगर
मुझको यक़ीन है ये वही रास्ता नहीं

चल तो पड़ा हूँ पर ये मुझे लग रहा है क्यूँ
है रास्ता मगर ये सही रास्ता नहीं

इस ओर तुम इशारा किये जा रहे हो पर
उसकी डगर को सिर्फ़ यही रास्ता नहीं

हश्र देखा है

मैल वालों का हश्र देखा है
मैंने नालों का हश्र देखा है

तुम यकीं तारीख़ों पे करते हो
हमने सालों का हश्र देखा है

एक कोशिश में खुल गया, जिसने
बंद तालों का हश्र देखा है

जो मचाते हैं एक हलचल-सी
उन सवालों का हश्र देखा है!

हद से ज़्यादा ही झुकने वाले, बता
झुकती डालों का हश्र देखा है

उसके भीतर भी है मवाद भरा
जिसने छालों का हश्र देखा है

हम उलझते हैं हर घड़ी **अनमोल**
जबकि जालों का हश्र देखा है

ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा

हुआ दुखी गर जहान से रब, मीन खिसकी, पहाड़ टूटा
बिना सबब के भला कहाँ कब, ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा

बग़ैर सोचे, बग़ैर समझे, बस अपनी ख़ातिर जो आदमी ने
बदलना चाहा ख़ुदाई का ढब, ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा

कहा कि ख़ुशियाँ बिखर गयी हैं, हर एक उत्साह दब गया है
मैं सीधे-सीधे न कह सका जब, ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा

न जाने कब का गुज़र चुका है, बेचारी क़ुदरत के सर से पानी
किसी को हैरत न हो अगर अब, ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा

पिता को खोकर ज़रा-सी मुनिया, अगर बताती तो क्या बताती
किसी तरह बस ये कह सके लब, "ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा"

कहाँ किसी ने सबक़ लिया कुछ, कहाँ किसी को है कोई परवाह
भले हमारे समय में जब तब, ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा

भरम न उसको रहे कि केवल, वही है अनमोल इक खिलाड़ी
सो आदमी को दिखाने करतब, ज़मीन खिसकी, पहाड़ टूटा

हमें आरे सुकूं देंगे

मुझे तो लग रहा था सिर्फ जलधारे सुकूं देंगे
मगर कुछ पेड़ कह उट्ठे-'हमें आरे सुकूं देंगे'

सभी ने चाँद-सूरज से लगा रक्खी थी उम्मीदें
नहीं सोचा था काली रात में तारे सुकूं देंगे

छुपा दी हैं विरोधी तख़्तियाँ हमने बहुत पीछे
हमें मालूम है इस वक़्त जयकारे सुकूं देंगे

दुखों की आँच लगते ही सहमकर सूख जाएँगे
तुम्हें क्या लग रहा है सुख के फव्वारे सुकूं देंगे

हटाओ तुम ये वीडियो गेम, मोबाइल के बहलावे
ये बच्चे हैं, इन्हें तो सिर्फ गुब्बारे सुकूं देंगे

हवा में ज़हर, वन में आग, नदियों में है पानी कम
बताओ किस तरह तुमको ये बेचारे सुकूं देंगे

वही **अनमोल** जो औरों की नादानी पे हँसता है
उसे उम्मीद है इक रोज़ अंगारे सुकूं देंगे

बहुत मुश्किल समय में तो

बहुत मुश्किल समय में तो सहारे भी नहीं टिकते
अगर हो सामने पत्थर तो आरे भी नहीं टिकते

हमें तो लग रहा था सिर्फ डरते हैं हमीं लेकिन
दुखों के सामने तो पग तुम्हारे भी नहीं टिकते

किनारे रोककर रखते हैं पानी को हमेशा पर
अगर हो वेग ज़्यादा तो किनारे भी नहीं टिकते

है नभ के पास ऐसी कौनसी चुम्बक कि धरती पर
ज़रा-सी फूँक मिलते ही गुबारे भी नहीं टिकते

अगर इक सच निकल आया तो सारे झूठ भागेंगे
अजी सूरज के आगे सौ सितारे भी नहीं टिकते

कभी भारी पड़ा करते हैं बंदूकों पे कुछ नारे
कभी लाठी निकल आये तो नारे भी नहीं टिकते

तुम्हारे साथ तो **अनमोल** वीराने सुहाते हैं
तुम्हारे बिन इन आँखों में नज़ारे भी नहीं टिकते

ये शब्द मर नहीं सकते

ख़त्म मतभेद कर नहीं सकते
मन लड़ाई से भर नहीं सकते

कितना मुश्किल है अपने खो देना
हम इमेजिन भी कर नहीं सकते

दुख डराता है हद से ज़्यादा पर
दुख से ऐसे तो डर नहीं सकते

ख़ौफ़, बंदूक, बम, धमाके, ख़ून
हाय ये शब्द मर नहीं सकते!

नाम भर के हैं वे सभी क़ानून
जो गुनाहगार धर नहीं सकते

दर्द तो हम अपार दे देंगे
हाँ, मगर पीर हर नहीं सकते

हमने कोशिश अगर न की **अनमोल**
ये नज़ारे सुधर नहीं सकते

हराम की जो कमाई पसंद करते हैं

हराम की जो कमाई पसंद करते हैं
कहाँ वो जग की भलाई पसंद करते हैं

दिलों के बीच जो खाई पसंद करते हैं
उन्हीं को आज के भाई पसंद करते हैं

बस आसपास वही लोग देखने हैं मुझे
जो आसपास सफ़ाई पसंद करते हैं

ख़ुदा तू उनसे हमेशा ही दूर रखना हमें
जो लोग 'आग लगाई' पसंद करते हैं

उन्हें तो रब भी हमेशा पसंद करता है
जो लोग सिर्फ सच्चाई पसंद करते हैं

हमारा शहर तो अच्छाइयों का आदी था
ये कौन हैं जो बुराई पसंद करते हैं

यहाँ तू ख़ुद को बचाएगा किस तरह **अनमोल**
यहाँ सभी तो लड़ाई पसंद करते हैं

चुनरिया रेत की

चुनरिया रेत की पत्थर से चीर, खींची है
ज़मीं के तन पे ये किसने लकीर खींची है

वो बादलों की तरफ देखकर ये कहता रहा
बरस के तुमने मेरे मन की पीर खींची है

मैं डाकुओं की पकड़ मैं न आने वाला था
सो उसने पोटली बनकर फ़क़ीर, खींची है

तुम्हें लगा कि निकल आयी फाँस जल्द मगर
ये उसने मोड़कर सारा शरीर खींची है

मैं ऐसे शख्स को कैसे अमीर कह दूँ भला
कि उसने भूखे के हाथों से खीर खींची है

चलाये तुमने अभी तक है तीर लाखों मगर
बताओ इनसे किसी की भी पीर खींची है

हर एक फूल की रग-रग में ज़ह्र है **अनमोल**
ये रुत ने बाग पे कैसी समीर खींची है

महक उठ रही है समूचे बदन से

हर इक ने लड़ाई के दौरान रक्खा
अदब और तहज़ीब का ध्यान रक्खा

महक उठ रही है समूचे बदन से
ये किसने है साँसों में लोबान रक्खा

बहा ले गयी जल की धाराएँ पल में
निरी रेत का नाम चट्टान रक्खा!

ख़ुद अपने और इंसान के बीच रब ने
ज़रूरत थी कितनी कि शैतान रक्खा

सितारों के रहते अँधेरी हैं रातें
'इसी बात ने मुझको हैरान रक्खा'

मेरी हर ज़रूरत को करता है पूरी
अमां उसने आख़िर है क्या ठान रक्खा

यहाँ जितने मुँह उतनी बातें हैं **अनमोल**
कहाँ जीना दुनिया ने आसान रक्खा

(मेरे शहर रुड़की के सुप्रसिद्ध साहित्यकार कृष्ण सुकुमार जी के एक मिस्रे पर अभ्यास)

जहाँ था ज़रूरी, वहीं ध्यान रक्खा

इधर या उधर को नहीं कान रक्खा
जहाँ था ज़रूरी, वहीं ध्यान रक्खा

हमीं ने ही पहले खड़ी की समस्या
हमीं ने ख़ुद उसका समाधान रक्खा

वजह की ही दरकार है सिर्फ हमको
लड़ाई का है सारा सामान रक्खा

यहाँ से तुम्हें मिल सकेगा न कुछ भी
ये घर हमने पहले से है छान रक्खा

उदासी भरी शाम, सूरज रुंआसा
ये उसने अजब दिन का अवसान रक्खा

समझ ही न पाया मैं हैरान क्यूँ हूँ
'इसी बात ने मुझको हैरान रक्खा'

विचारों ने दुनिया बनाई है **अनमोल**
विचारों का हमने बहुत मान रक्खा

(मेरे शहर रुड़की के सुप्रसिद्ध साहित्यकार कृष्ण सुकुमार जी के एक मिस्रे पर अभ्यास)

रफ़ा-दफ़ा

उसके करम ने कर दिये सबके रफ़ा-दफ़ा
हो जाएँ काश मेरे भी दुखड़े रफ़ा-दफ़ा

इक दिन निकल पड़ूँ मैं अजानी-सी राह और
कर लूँ हर एक फ़िक्र को ख़ुद से रफ़ा-दफ़ा

माना कि हैं ज़रूरी सभी ज़िम्मेदारियाँ
कर बैठिएगा मत कहीं सपने रफ़ा-दफ़ा

ऐसे ख़राब दौर निगलता है सब हुनर
पतझर में जैसे होते हैं पत्ते रफ़ा-दफ़ा

उसकी नज़र ने मेरे सभी ग़म भगा दिये
हीरो ने जैसे कर दिये गुण्डे रफा-दफ़ा

जैसे ही आँख फेर ली थोड़ी-सी वक़्त ने
हो जाएँगे ये सारे ही नख़रे रफ़ा-दफ़ा

बे-मोल मोल-भाव कर **अनमोल** हो गया
छोड़ो भी ऐसी बात को, करिये रफ़ा-दफ़ा

नदिया में पतवार हुए हैं जम्भेश्वर

नदिया में पतवार हुए हैं जम्भेश्वर
सबके तारणहार हुए हैं जम्भेश्वर

हरि की वाणी लेकर आये दुनिया में
हरि का इक उपहार हुए हैं जम्भेश्वर

इंसानी क़द-काठी में थे महापुरुष
विष्णु का अवतार हुए हैं जम्भेश्वर

जीव-द्या का जन-जन को संदेश दिया
स्नेहमयी संसार हुए हैं जम्भेश्वर

फूँक दिया है हारे मन में जीवन-मंत्र
आशाओं का द्वार हुए हैं जम्भेश्वर

मानवता की ख़ातिर सूत्र दिए उनतीस
मानव पर उपकार हुए हैं जम्भेश्वर

इक सौ बीस **अनमोल** धरोहर सबदों का
एक अनोखा हार हुए हैं जम्भेश्वर

कहो है कि नहीं

फ़सल है खेत का सिंगार, कहो है कि नहीं
फ़सल के सिर पे पड़ी मार, कहो है कि नहीं

कभी अकाल, कभी बाढ़, कभी टिड्डी दल
हर एक साल ये आसार, कहो है कि नहीं

किसानी इतनी भी आसान नहीं है भाई
ये है दुधारी-सी तलवार, कहो है कि नहीं

न है उपज का कोई मोल, पसीना बेकार
किसान ख़ुद पे ही है भार, कहो है कि नहीं

युवा शहर की तरफ चल दिये हैं गाँवों से
ज़मीन-खेत है बेकार, कहो है कि नहीं

उधार चुक नहीं पाया है कई बरसों का
उधार 'मौत का है वार', कहो है कि नहीं

उम्मीद किससे अब **अनमोल** लगाई जाए
है माई-बाप ही सरकार, कहो है कि नहीं

ग़ज़ब बोली बाँसुरी

बिन एक शब्द के भी ग़ज़ब बोली बाँसुरी
भगवन के होंठ छू के अमर हो ली बाँसुरी

दोनों जहान झूम उठे मंत्रमुग्ध हो
कान्हा ने अपने हाथ कभी जो ली बाँसुरी

रो ही पड़ी थी दूरियों को सोच कृष्ण से
राधा की खीज सुनते हुए भोली बाँसुरी

बन सारथी सिखायी समर की महारथें
और प्यार जब सिखाने लगे तो ली बाँसुरी

अपने हुनर से काम लो हथियार की तरह
देनी थी सीख अबकि नई, सो ली बाँसुरी

गिरधर अगर उदास से बैठे दिखे कभी
दुनिया की पीर ख़ुद मैं लिए रो ली बाँसुरी

कण-कण ज़मीं की रूह का **अनमोल** हो गया
नटवर की एक हूक पे जब डोली बाँसुरी

संसार में मारे फिरेंगे

ये न सोचा था कभी संसार में मारे फिरेंगे
शान से बैठेंगे लेकिन कार में मारे फिरेंगे

दर-ब-दर तूफ़ान की रफ़्तार में मारे फिरें क्यूँ
इससे बेहतर फूल बनकर हार में मारे फिरेंगे

तुम विचारों को न इतनी छूट दो बतला रहा हूँ
हाथ से निकले तो ये बेकार में मारे फिरेंगे

नाम पाने से बहुत पहले हमें यह सोचना था
बे-सबब बनकर ख़बर अख़बार में मारे फिरेंगे

तुम हमें जेबों में रक्खो काग़ज़ी इतने नहीं हैं
हम खरे सिक्के हैं सो बाज़ार में मारे फिरेंगे

नाव के जैसे किसी दिन चल पड़ेंगे हम भँवर में
और फिर दरिया की पागल धार में मारे फिरेंगे

एक डर **अनमोल** चीज़ों को सताता है हमेशा
गर किसी को मिल गये उपहार में, मारे फिरेंगे

बहुत ही धीमी है

खड़काने को द्वार बहुत ही धीमी है
साँकल की यह मार बहुत ही धीमी है

कैसे काट सकेगी मोटे पत्थर को
इस दरिया की धार बहुत ही धीमी है

पछताता है जिसने इक दिन बोला था
कुदरत तेरी मार बहुत ही धीमी है

रण में उतरा है तो चीखे भी खुलकर
उसकी यह ललकार बहुत ही धीमी है

क्या करना है तेज़ हवा का बतलाओ
साँसों की दरकार बहुत ही धीमी है

देख-संभल कर चलने वालों को भी लोग
बोलेंगे रफ़्तार बहुत ही धीमी है

धीमे तो पहिये चलते हैं पर **अनमोल**
सब कहते हैं कार बहुत ही धीमी है

आदत न डालिए

सुख-चैन के बिसात की आदत न डालिए
हीरे-जवाहरात की आदत न डालिए

कुछ बेड़ियाँ भी ठीक हैं पैरों के वास्ते
हर चीज़ से निजात की आदत न डालिए

हाँ, रंग ज़िन्दगी में ज़रूरी तो है मगर
रंगीन-सी हयात की आदत न डालिए

तनहाई मच्छरों की तरह चूसती है खून
तनहाइयों की रात की आदत न डालिए

रुसवा करे जो आपको लोगों के दरमियान
ऐसी किसी भी बात की आदत न डालिए

बाहर निकल के देखिए दुनिया भी है हसीन
अनमोल अपनी ज़ात की आदत न डालिए

ये जयकारे थोथे हैं

भाषण, रैली, वादे, नारे थोथे हैं
हद से ज़्यादा बातों वाले थोथे हैं

असल्ली मुद्दों से भटकाने वाले सब
देश-धरम के ये जयकारे थोथे हैं

मानव को जो अलगाते हैं मानव से
ऐसे जज़्बे और इरादे थोथे हैं

अच्छे-अच्छे भी भीतर से हैं कुंठित
सच कहता हूँ अच्छे-अच्छे थोथे हैं

कथनी-करनी इनकी देखो फिर सोचो
ज्ञान लुटाने वाले कितने थोथे हैं

जिनको समझे बैठे हैं हम जननायक
बिन पैंदे के हैं ये लोटे, थोथे हैं

झूठ-कपट के सौदागर हैं ये **अनमोल**
यानी इनके उजले सपने थोथे हैं

कि हिम्मत बँधी रहे

इक दिन फलेगी आस कि हिम्मत बँधी रहे
होगा नया उजास कि हिम्मत बँधी रहे

घट जाएँगी ये दूरियाँ और होंगे हम सभी
एक-दूसरे के पास कि हिम्मत बँधी रहे

हालाँकि सूख जाना हताशा भरा है पर
हरियाएगी ये घास कि हिम्मत बँधी रहे

सच है किसी भी हाल में रहता नहीं कभी
ख़ाली कोई गिलास कि हिम्मत बँधी रहे

ग़म के थपेड़े तोड़ न दें मन के कोहिनूर
बैठो न यूँ उदास कि हिम्मत बँधी रहे

पतझड़-सा है ये दौर कि पतझड़ कभी नहीं
रहता है बारो-मास कि हिम्मत बँधी रहे

अनमोल फिर से सुख के घने झुरमुटों के बीच
होगा हमारा वास कि हिम्मत बँधी रहे

न बोर होते हैं

जो फ़न से हाथ मिला ले, न बोर होते हैं
हुनर की पोटली वाले न बोर होते हैं

जहान भर के क़दम गर ठिठक भी जाएँ तो
हों बोरियत के जो पाले न बोर होते हैं

उड़ान सीखते पंछी ने चहचहा के कहा
उड़ान सीखने वाले न बोर होते हैं

हराम कौर भले हो रहे हों बोर मगर
मशक्कतों के निवाले न बोर होते हैं

अँधेरे ख़ौफ के सायों को कोई बतलाए
अकेले रहके उजाले न बोर होते हैं

उन्हें तो सच में ही **अनमोल** कह दिया जाए
महीनों बैठ जो ठाले न बोर होते हैं

इक रोज़ मेरे जिस्म की नस-नस पे

इक रोज़ मेरे जिस्म की नस-नस पे छा के खुल
इक रोज़ मेरे पास, बहुत पास आ के खुल

चुपचाप घड़ी भर को कभी आ बग़ल मैं बैठ
इक लफ़्ज़ बिना बोले ही बस मुस्कुरा के खुल

यूँ दूर से घूँघट न उठा बीच राह में
मंज़िल! तू अचानक ही कभी सर पे आके खुल

रख दूँगा तेरे सामने ख़ुद को मैं हर्फ़-हर्फ़
कह दे कभी तू पास जो अपने बिठा के, 'खुल'

आराम, तसल्ली से बता एक-एक बात
मैसेज! न पंछी की तरह फड़फड़ा के खुल

ऐ राज़! तेरा वक़्त भी आना था आ गया
अब तू ख़ुशी के मारे भले गा बजा के खुल

अनमोल! नहीं है तू कोई झूठ का हिसाब
ऐसे किसी के आगे नहीं हड़बड़ा के खुल

करतब हमारे देख के

करतब हमारे देख के सबने कहा-अरे
लेकिन जो आपने कहा वो ख़ास था 'अरे'

उसके फ़रेब पर न कहा मैंने एक लफ़्ज़
पर ज़ेहन की नसों में तड़पता रहा 'अरे'

जंगल था इस जगह तो किसी वक़्त, आज क्यों
पसरा पड़ा है दूर तलक रास्ता अरे

सीने पे इक पहाड़ के गिरने की तरह था
यूँ देखिए तो इक ज़रा-सा लफ़्ज़ था 'अरे'

चेहरे पे झुर्रियाँ हैं, शिकन है ललाट पर
इतना ख़राब वक़्त का है तज़रिबा अरे

दरकार हाथ में तो थी तलवार की मगर
लेकर खड़े हैं आप यहाँ झुनझुना, अरे

समझो कि ज़िन्दगी में मज़ा बरक़रार है
अनमोल गर लबों पे रहें-हो, अहा, अरे

क़ीमती दृश्यों की धरपकड़

कुछ गुदगुदाते क़ीमती दृश्यों की धरपकड़
होने लगी है नींद में ख़्वाबों की धरपकड़

हल्ला मचा है आज मोहल्ले में खेल का
कितना सुकूं है देख के बच्चों की धरपकड़

बातें तमाम हो गयी थीं दो दिलों के बीच
यानी थी क़ामयाब इशारों की धरपकड़

हल्की-सी रोशनी में है बिस्तर पे लूटपाट
नज़रों की धरपकड़, कभी बातों की धरपकड़

गीली ज़मीं पे बैठ के बादल निहारिये
अच्छी लगेगी आपको बूँदों की धरपकड़

तनहा अँधेरी रात किसे पूछे यह सवाल
क्या हो गयी है आज सितारों की धरपकड़

अनमोल ज़िन्दगी भी रहेगी रवां-दवां
जारी रही जो नेक ख़यालों की धरपकड़

जय भारत

बदन लहू से हुआ तर तो बोले जय भारत
हुए जो हौसले जर्जर तो बोले जय भारत

माँ भारती के सपूत ऐसे शेर थे जिनको
दिखाये ख़ौफ़ ने तेवर तो बोले जय भारत

दीवाने जान हथेली पे रख के लड़ते चले
मचल के तन से गिरे सर तो बोले जय भारत

तमाम दर्द सहे हँसते-हँसते फिर भी कभी
उठा न ज़ुल्म का पत्थर तो बोले जय भारत

सितम की आँख में आँखें गड़ा के गाते रहे
क़हर गिरा अगर उन पर तो बोले जय भारत

दिलेर लोग थे सचमुच कि वे जिन्हें **अनमोल**
दिखाया दुश्मनों ने डर तो बोले जय भारत

वन्दे मातरम

है दिल से यह निकलती सदा वन्दे मातरम
मेरे वतन, तू मेरी वफ़ा वन्दे मातरम

नापाक हौसलों से कहो खैर वो करें
अब हमने है कफ़न पे लिखा वन्दे मातरम

आवाज़ दी हमें है अगर सरहदों ने तो
दिल चीख-चीख बोल उठा वन्दे मातरम

तुझ पर शहादतों के उठे मन में गर ख़याल
साँसों ने बार-बार कहा वन्दे मातरम

दिल पर हुकूमतों की कोई बात जब चली
परबत, नदी, शजर ने कहा वन्दे मातरम

करते हैं रोज़-रोज़ तेरे हक़ में हम सभी
रब से सलामती की दुआ वन्दे मातरम

अनमोल ख़ुशनसीब हो जो तेरी गोद में
लेने उसे जो आए कज़ा वन्दे मातरम

सफ़र काट रहे हैं

अनगिन उदासियों में डगर काट रहे हैं
बिन हमसफ़र जो लोग सफ़र काट रहे हैं

रस्ते की रौनकों से उन्हें वास्ता भी क्या
जो सिर्फ काटने को सफ़र काट रहे हैं

घर के ही भेदी लंका ढहाते हैं हमेशा
नदियों के चक्रव्यूह भँवर काट रहे हैं

फल-फूल-छाँव पेड़ हमें क्या नहीं देते
सब जानते हैं लोग, मगर काट रहे हैं

ख़ुद पर हम अपनी मिर्च-सी नज़रों को घुमाकर
अपनी नज़र की ख़ुद ही नज़र काट रहे हैं

अफ़वाह रख के चंद ज़ुबानों पे कई झूठ
फिल्मी अदा से सच्ची ख़बर काट रहे हैं

अनमोल यह भी कैसी बग़ावत है बताओ
सब अंक मिलके अपने सिफ़र काट रहे हैं

फैसला दस-पचास में बदला

फैसला दस-पचास में बदला
और इक पेड़ घास में बदला

हर निराशा को आस में बदला
जब अँधेरा उजास में बदला

वो बदलना भला लगा था जब
कोई अच्छे की आस में बदला

मंज़िलें हाथ उस घड़ी आयीं
जब जुनूं भूख-प्यास में बदला

इस बदलने को सबने बोला 'ख़ास'
आम जब कोई ख़ास में बदला

आदतों ने तो पैर पटके ख़ूब
मन ये फिर भी न दास में बदला

जग बदलने की चाह ने **अनमोल**
कितना कुछ आसपास में बदला

एक दिन ये हादसा हो जाएगा

एक दिन ये हादसा हो जाएगा
आदमी से रब ख़फ़ा हो जाएगा

किसने सोचा था कि मज़हब एक दिन
खौफ़ के सामान-सा हो जाएगा

ज़ेहनो-दिल के बीच फिर-से ठन गयी
आज शायद फ़ैसला हो जाएगा

झुकना जिस दिन सीख लेगा ख़ुद से तू
क़द तेरा उस दिन बड़ा हो जाएगा

असल में दुनिया समझ तब आएगी
जब दुखों से राबता हो जाएगा

इक दफ़ा बस ठीक-से पढ़ ले उसे
हर कोई **अनमोल** का हो जाएगा

वो नेकियाँ यूँ

वो नेकियाँ यूँ कमा रहा था
क़फ़स से पंछी उड़ा रहा था

बहुत सहे थे थपेड़े उसने
मगर जगह पर अड़ा रहा था

है जिसके दम पे शहर मुनव्वर
कभी वो ख़ुद गुमशुदा रहा था

तो क्या जो खंडर-सा हो गया है
मकान इक दिन नया रहा था

गले थी लगने की चाह मेरी
तू हाथ अपना बढ़ा रहा था

वो जिसने तुमसे हमें मिलाया
वो लम्हा **अनमोल**-सा रहा था

नई पीढ़ी का जज़्बा

क़दम आगे बढ़ाना चाहता है
वो कुछ करके दिखाना चाहता है

ख़ुदा के वास्ते उसको न रोको
जो देहरी लाँघ जाना चाहता है

नई पीढ़ी का जज़्बा इस ज़मीं पर
नई फ़सलें उगाना चाहता है

सितारों से सजे उस आसमां को
कोई धरती पे लाना चाहता है

मेरे माज़ी को देकर वो सदाएँ
मुझे फिर ढूँढ़ लाना चाहता है

हमेशा ख़्वाब में **अनमोल** आकर
न जाने क्या बताना चाहता है

जग से दरवेश

जग से दरवेश क्या ले गये
प्यार से जो मिला, ले गये

वक़्त से करने जद्दोजहद
फ़लसफ़ा हम नया ले गये

दर्द, तड़पन, घुटन, बेबसी
अश्क़ सबकुछ बहा ले गये

सौंपकर पोथियाँ धर्म की
तुम दिलों से ख़ुदा ले गये

मुल्क के हक़ के सब फ़ैसले
क्यों उन्हीं के हवाले गये

नींद के शहर से रात हम
ख़्वाब कुछ फिर चुरा ले गये

काश **अनमोल** से वो कहें
तुम हमारा जिया ले गये

एक बस मुस्कान ली

क्या हुआ गर उसने मेरी जान ली
इस बहाने दोस्ती पहचान ली

मुश्किलें पिछले सफ़र की याद कर
राह उसने इस दफ़ा आसान ली

आज दुश्मन ने मेरे क्यूँकर भला
बात मेरी बिन जिरह के मान ली

कर दिया उन पर निछावर कुल जहां
और उनसे एक बस मुस्कान ली

चीर कर इक पल में रख देगी भँवर
नाव ने उस पार की गर ठान ली

छोड़कर सब रौनकें **अनमोल** ने
रह ग़ज़ल की किसलिए वीरान ली

मरहबा कह दूँ

तुम्हारे हुस्न को में क्या भला कह दूँ
मुकम्मल ताज का ही तर्जुमा कह दूँ

बहुत ही ख़ूबसूरत दिख रहे हो तुम
मेरा मन कह रहा है मरहबा कह दूँ

तुम्हें लेकर जो आया था मेरी ख़ातिर
उस इक पल को मैं सदियों से बड़ा कह दूँ

इसे ही दर्ज कर लो तुम बयानों में
कहीं जुमला मैं कोई दूसरा कह दूँ

कोई अड़चन न पत्थर हैं न ही काँटे
बता कैसे इसे मैं रास्ता कह दूँ

तुम्हारी माँ उसी पल टूट जाएगी
अगर बच्चो! तुम्हारा फैसला कह दूँ

वो बोला, "किस तरह **अनमोल** होते हैं?"
बताओ मैं उसे क्या टोटका कह दूँ

लाले पड़े हैं

उजालों के यहाँ लाले पड़े हैं
अँधेरे इस क़दर पसरे पड़े हैं

घुटन, जद्दोजहद, रुस्वाई, गुरबत
मुक़द्दर में ये सब लिक्खे पड़े हैं

हमें क्यों दाद मिलती ही नहीं है
यह कहकर शेर कुछ फूले पड़े हैं

महज़ इक हार से थक कर न बैठो
अभी तो हाथ में मौक़े पड़े हैं

ये बिस्तर, घर, बगीचा और मेरा दिल
तुम्हारे हिज्र में बिखरे पड़े हैं

ज़ेहन मैं फ़िल्म-सी इक चल रही है
पुराने अक्स कुछ उभरे पड़े हैं

अरे **अनमोल** जी, हह्...ख़ाक, छोड़ो
यहाँ शायर कई मंझे पड़े हैं

गाँठ बाँध कर लौटा है

माँ की बातें गाँठ बाँध कर लौटा है
कुछ सौगातें गाँठ बाँध कर लौटा है

धूप न सर तक आयेगी अब शहरों की
चाँदनी रातें गाँठ बाँध कर लौटा है

अबके जीत यक़ीनन समझो है उसकी
पिछली मातें गाँठ बाँध कर लौटा है

मुमकिन है के अब धरती की प्यास बुझे
वो बरसातें गाँठ बाँध कर लौटा है

संगत में अपनों की कुछ पल क्या बैठा
कितनी घातें गाँठ बाँध कर लौटा है

अभी-अभी माज़ी से यादों की **अनमोल**
कुछ बारातें गाँठ बाँध कर लौटा है

साँसें कुछ यूँ

साँसें कुछ यूँ प्यास बुझाया करती हैं
अक्सर तेरी ख़ुशबू लेती रहती हैं

तिनके को पतवार किया हमने कैसे
सहमी लहरें अब तक सोचा करती हैं

अपनापन जब अपनी पर आ जाता है
ऊँची-ऊँची दीवारें भी ढहती हैं

बेटे लाठी बनकर साथ निभाएँ गर
बूढी माएँ ख़ूब दुआएँ देती हैं

अब माज़ी के अंतहीन दरिया से रोज़
यादें जाने कितने लम्हें खेती हैं

राजमहल में अब केवल हैं सन्नाटे
बीती सदियाँ अभिलेखों में जीती हैं

नदियाँ जब परबत से रुखसत हो जाएँ
उस दिन से **अनमोल** निरंतर बहती हैं

नाम मेरा कहीं

दूर तुमसे अगर रहा होगा
तुमको वो ख़ूब जानता होगा

आँख से आँख क्यूँ न मिल पायी
कुछ तो मुझसे छुपा रहा होगा

उसको हरदम चढ़ावे चढ़ते हैं
वो किसी कौम का ख़ुदा होगा

राज़ की बात है ज़रा धीरे!
कान कोई लगा रहा होगा

तुमसे मिलकर ठहर क्यूँ जाता है
वक़्त हैरत से सोचता होगा

लोग **अनमोल** ही बुलाते हैं
नाम मेरा कहीं पड़ा होगा

क़ैद में किसकी समय है

क़ैद में किसकी समय है, बोलिये
क्यूँ अभय को ख़ुद से भय है, बोलिये

है डरी नौका से लहरें आज क्यूँ
अबकि दरिया पार तय है, बोलिये

खुद रही इंसानियत की कब्र जब
धर्म की कैसे विजय है, बोलिये

झुण्ड है बे-ख़ौफ और हथियार हैं
आज पृथ्वी पर प्रलय है, बोलिये

हर गली में चीर बिखरे हे किशन!
बाँसुरी में अब भी लय है, बोलिये

घुट रहा अभिव्यक्तियों का दम यहाँ
क्यूँ सिसकता वांग्मय है, बोलिये

हर्ष तो **अनमोल** दिखता ही नहीं
युग अगरचे स्वर्णमय है, बोलिये

ख़्वाबों की ताबीर

ख़्वाबों की ताबीर कहाँ है
वह उजली तस्वीर कहाँ है

तुमने जो दिल पर लिखी थी
बतलाओ, तहरीर कहाँ है

ज़ुल्म जड़ों से काटा करती
हक़ की वह शमशीर कहाँ है

कभी रात भर लुटती थी जो
अश्क़ों की जागीर कहाँ है

सहन में बच्चों का हो हल्ला
शहर की वो तक़दीर कहाँ है

शेर सभी **अनमोल** हों जिनके
वह ग़ालिब, वह मीर कहाँ है

कुछ नज़ारे रह गये हैं

अब फ़क़त अश्क़ों के धारे रह गये हैं
हम यहाँ पर बेसहारे रह गये हैं

बिन तुम्हारे रात की तनहाइयों में
हम हैं, गम हैं और तारे रह गये हैं

भूख हमको ले गयी शहरों की जानिब
सूते छत, गलियाँ, दुआरे रह गये हैं

हम जला बैठे अमन के सारे पन्नेग
अब किताबों में शरारे रह गये हैं

शायरी को दिल में जबसे है बसाया
बस क़लम-कागज़ हमारे रह गये हैं

वक़्त तो **अनमोल** कब का खो चुका है
पर नज़र में कुछ नज़ारे रह गये हैं

ख़ुशी के काफ़िले

कुछ गिले-शिकवे नये चलते रहे
पर ख़ुशी के काफ़िले चलते रहे

दरमियाँ साँसों के थे तुम इसलिए
धड़कनों के सिलसिले चलते रहे

इश्क़ की हर सल्तनत में अक्ल पर
दिल के ही बस फ़ैसले चलते रहे

दूर तक तपती ज़मीं थी दर्द की
पर लबों को हम सिले चलते रहे

वो कभी अपना करम फ़रमाएगा
आस की चादर तले चलते रहे

हार कर **अनमोल** कैसे बैठते
हमसे आगे हौसले चलते रहे

कहाँ कर पाते हैं

उलझन की पहचान कहाँ कर पाते हैं
हम ख़ुद को आसान कहाँ कर पाते हैं

पूरे सब अरमान कहाँ कर पाते हैं
कुछ चीज़ें इंसान कहाँ कर पाते हैं

चाह बहुत है जी भर बातें करने की
लेकिन मेरी जान कहाँ कर पाते हैं

मुश्किल भी तो आ जाती है चुपके-से
हम भी तो अनुमान कहाँ कर पाते हैं

दिल से आने वाली आवाज़ों की ओर
चाहें भी तो कान कहाँ कर पाते हैं

सच की क़ीमत ख़ूब समझते हैं लेकिन
सच का हम सम्मान कहाँ कर पाते हैं

अपने हाथों अपनी हस्ती को **अनमोल**
मुझ जैसे नादान कहाँ कर पाते हैं

ज़रा-सी कम समझदारी

कई आँखों के वो सपने सुहाने तोड़ देती है
ज़रा-सी कम समझदारी घराने तोड़ देती है

जो मसले हैं उन्हें आपस में बातों ही से हल कर लो
दरार इतनी-सी हो लेकिन चट्टानें तोड़ देती है

यूँ नफ़रत कुछ नहीं है पर इसे न पास आने दो
ये दिल में बैठकर रिश्ते पुराने तोड़ देती है

वफ़ा, ईमान, होशियारी, समझदारी, सयानापन
मुसीबत इनको भी कैसे न जाने तोड़ देती है

नई पीढ़ी को हो एहसास मीठे और कड़वे का
अदब की पुरख़ुलूसी के जो माने तोड़ देती है

बस इक उम्मीद की ही रोशनी है जो कि आख़िर में
अँधेरों के सभी अड्डे, ठिकाने तोड़ देती है

हवा के रुख से तू **अनमोल** अभी वाक़िफ़ नहीं है ये
कई ऊँची रसूखों के ठिकाने तोड़ देती है

बच्चों के हाथों मैं पत्थर

बच्चों के हाथों मैं पत्थर देखा है
और खिड़की के भीतर का डर देखा है

जब भी मैंने अपने अंदर देखा है
कुछ ना कुछ पहले से बेहतर देखा है

ख़ुद में ही कुछ सहमी-सहमी है, जबसे
दुल्हनिया ने साजन का घर देखा है

और कहीं क्यूँ उसको जाकर ढूँढूँ मैं
मैंने हर कंकर में शंकर देखा है

भूख लगी तो सबकुछ खाया है हमने
नींद आयी तो किसने बिस्तर देखा है

उभरा आँखों में जन्नत का नक्शा जब
प्यारा-सा, ख़ुशहाल, भरा घर देखा है

कितने पंछी मुझमें चीख उठे **अनमोल**
जब पेड़ों का जीना दूभर देखा है